IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 1, Issue 1, January 2021
Impact Factor: 5.731

/ke ,o i;Vu e foKkiu dh Hkfedk

Mk- dhfr 'kDyk
असिस्टेंट प्रोफेसर – संस्कृत
राजकीय महाविद्यालय मानिकपुर, जनपद, चित्रकूट (उ.प्र.)

विज्ञापन के मायाजाल से मुक्त होना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है। वर्तमान परिवेश विज्ञापन के अधीन हो गया है। एक समय था जब साधन सुलभ नहीं थे तब लोगों को पर्यटन करने में अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ होती थीं और एक देश की यात्रा करने में अनेक वर्ष लग जाते थे। प्रायः कुछ लोग पैदल चलते–चलते अपने प्राण भी त्याग देते थे। वस्तुतः यात्राएं कठिन थी एवं धर्म का पालन भी करना अत्यन्त दुर्लभ कार्य था। वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए आजकल प्रत्येक पर्यटन स्थल अनेक सुविधाओं से युक्त बनाए जा रहे हैं, ताकि लोगों को किसी भी प्रकार की कठिनाई न हो। धर्म एवं पर्यटन में अनेक समताएं व विशमताएं भी हैं। जहां धर्म एक ओर भौतिकतावाद का विरोध करता है वहीं पर्यटन अनेक भौतिक सुख–सुविधाओं का भण्डार बन रहा है। हलाकि आजकल धर्म पालन में भी भौतिक सुख–सुविधाओं का आधार लिया जा रहा है। आधुनिक दृष्टि से भी धर्म में अनेक छूट व विधान के अनुसार सुविधाएं प्राप्त हैं, फिर भी लोगों को धर्म व पर्यटन से सम्बन्धित विषयवस्तु को जानने व समझने के लिए समय नहीं है या लोगों को इन सब के बारे में रूचि नहीं है। धर्म एवं पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आज विज्ञापन की विशेष आवश्यकता है क्योंकि विज्ञापन ही एक ऐसी विषयवस्तु है जो धर्म व पर्यटन सम्बन्धी अनेक पहलुओं को अपने प्रभाव के कारण जनमानस में अपना प्रभाव छोड़ सकती है।

आज विज्ञापनों के विविध आयामों के विकसित हो जाने के कारण धर्म एवं पर्यटन को अच्छा सहयोग और बढ़ावा मिल रहा है। वर्तमान समय में धर्म को विविध क्षेत्रों से जोडने की आवश्यकता है जिसका अनूठा कार्य पर्यटनों के द्वारा आसानी से किया जा रहा है। भारत में अनेक स्थल हैं जो कि भारतीय संस्कृति एवं धर्म का बोध करा रहे हैं और वे स्थल किसी प्राचीन कथाओं एवं मार्मिक प्रसंगों पर आधारित होते हैं जिनका गुणगान वेदों द्वारा किया जाता रहा है, तथा उनका प्रचार–प्रसार विज्ञापन के परिवेश के का विज्ञापन के विविध माध्यमों द्वारा पर्यटनों में भी किया जा रहा है। कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि चाहे धर्म हो अथवा पर्यटन दोनों को आगे बढ़ाने में विज्ञापनों की अहम भूमिका रही है। आदिकाल से विज्ञापनों के पूर्व माध्यमों द्वारा चाहे वो भित्ति चित्र र माध्यम से हों या लेख अथवा संगीत व कला की कोई विधा रही हो उसके द्वारा विज्ञापन का कार्य किया जाता रहा है। जिस तरह धर्म व्यक्ति में अच्छे संस्कार जगाने का साहस रखता है तो उसी प्रकार पर्यटन के द्वारा भी लोगों में उत्साह, उमंग के साथ–साथ ज्ञान व धर्म की अपवृद्धि भी साथ ही साथ होती रही है। ज्ञान व धर्म की झलक पर्यटन है। आज विज्ञापन के विभिन्न माध्यमों द्वारा धर्म के विभिन्न पहलुओं को अनेक रूपों में प्रस्तुत किया जा रहा है, चाहे वह इलेक्ट्रानिक मीडिया हो अथवा प्रिन्ट मीडिया के विभिन्न स्वरूप हों। समाज में अनेक प्रकार के सामाजिक व धार्मिक कार्य किये जा रहे हैं जिसका प्रचार–प्रसार विज्ञापन के विविध आयामों द्वारा किया जा रहा है। जिससे अपने देश को सभ्यता व परम्परा भी विदेशों में अमिट छाप छोड़ रही है। भारतीय सभ्यता एवं परम्परा के अनुसार भारत विविध तीज–त्योहारों वाला देश है। अतः यहाँ पर विविध स्वरूप व भाव वाले विज्ञापन निर्मित किये जाते हैं और उसका प्रचार–प्रसार पर्यटनों में भी किया जा रहा है। हर प्रदेश की अपनी अलग–अलग लोक संस्कृति है। आजकल वहाँ की लोक संस्कृति का दार्शनिक व पर्यटन स्थल में प्रचार–प्रसार भी किया जा रहा है जिससे ये

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 1, Issue 1, January 2021 Impact Factor: 5.731

विज्ञापन के स्वरूप पर्यटन स्थलों की शोभा बढ़ाते हैं तथा भारतीय सभ्यता व परम्परा को गति देने में भी अपनी अहम् भूमिका निभा रहे हैं।

धर्म लोगों में एक चेतना व ज्ञान का संचार करता है। भारत में अनेक समुदाय व सम्प्रदाय के लोग हैं तथा लोगों में उनके इच्छा व ज्ञान के अनुरूप अनेक प्रकार के धर्म व आराध्य भी हैं जिनका पूरी तरह वर्णन करना असम्भव है। फिर भी कुछ मतों एवं विचारों को समक्ष रखने का अल्पप्रयास किया जा रहा है। धर्म में अनेक प्रकार के विधि–विधान एवं क्रियाओं का समावेश है। उन्हीं क्रियाओं व विधियों के द्वारा अनेक प्रकार के कथानक व चलचित्रों को विज्ञापन के विविध आयामों में प्रयुक्त करके पर्यटन में समावेश किया जा रहा है। इन सभी क्रियाओं के द्वारा एक ऐसी शक्ति उत्पन्न होती है जिसे अपनी इच्छा अनुसार आध्यात्मिक व भौतिक किसी भी रूप में परिणित किया जा सकता है। इस तपस्या का भाव समस्त हिन्दू धर्म में ओतप्रोत है। इन्हीं धर्म एवं पद्धतियों के अनुरूप ही देश व समाज के क्रमशः विकास के लिए व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास में एक अहम् भूमिका का प्रतिपादन करने के लिए पर्यटन का अहम् योगदान है। आज भारत सरकार द्वारा पर्यटन सम्बन्धी सेवाओं को अग्रसर करने के लिए अनेक प्रकार की सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा कार्य सम्पादित किये जा रहे हैं। वहीं दूसरी ओर इन पर्यटन स्थलों के प्रचार–प्रसार में सौन्दर्यानुभूति के लिए भारतीय परम्परा से सम्बन्धित अनेक प्रकार के भित्ति चित्र व मूर्ति–शिल्पों का समावेश भी किया जा रहा है तथा विज्ञापनों के द्वारा इनकी महत्ता का बखान किया जा रहा है।

भारतीय हिन्दू संस्कृति में ''गाय'' को माता की संज्ञा प्राप्त है तथा ''गोरक्षा'' के लिए अनेक प्रकार की योजनाएं एवं संगोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है जिससे धर्म को बढ़ावा मिल रहा है तथा देश के विकास कार्य में अनेक प्रकार के सहयोग भी प्राप्त हो रहे हैं। हर मनुष्य अपने लिए सर्वोत्तम चाहता है इसलिए वह जो भी कुछ करता है. उसे यही समझ कर करता है जिससे उसे सर्वोत्तम परिणाम मिले। इसी श्रृखला में पर्यटन क्षेत्रों का विकास हो रहा है ताकि रोजगार के साथ–साथ मानव सभ्यता में एक नया क्रम जुड़ सके। पर्यटन क्षेत्रों के विकास से लोगों में वहाँ की जलवायु, संस्कृति व लोक संस्कृति की व्यापकता की उन्नति का बोध होता है तथा वहाँ की महत्ता भी बढ़ जाती है। भारत में जितने भी क्षेत्र हैं वे सभी धर्म से जुड़े हुए हैं अतः आज सभी जगहों में पर्यटन केन्द्र खुल रहे हैं। इन पर्यटन केन्द्रों के चलते लोगों में उल्लास के साथ–साथ भ्रमण का भी अवसर भी प्राप्त होता है। प्रायः इन पर्यटन स्थलों का भ्रमण करने के लिए व्यापक संख्या में विदेशी भी भारत आते हैं तो इस दशा में उनको हमारी भारतीय संस्कृति व भारतीय परम्परा का अभूतपूर्व योगदान व गौरव प्राप्त होता है, जिससे हमारी संस्कृति को बढ़ावा मिलता है।

प्रायः दुष्प्रचार के कारण हमारी संस्कृति व सभ्यता पर गहरा आघात भी लग जाता है. परन्तु विज्ञापन के उन्हीं स्वरूपों के द्वारा धर्म का प्रचार–प्रसार भी किया जाता है। इसीलिए धर्म हो या पर्यटन सभी क्षेत्रों में विज्ञापन की अहम् भूमिका है और आवश्यकता भी। भारत के धर्मशास्त्रों द्वारा विविध क्षेत्रों से सम्बन्धित अनेक प्रकार की जानकारियां भी प्राप्त होती है। उनमें जीवन जीने की कला से लेकर जीवन की पूर्णता व नवजीवन प्रदान करने हेतु अनेक प्रकार के तथ्यों का वर्णन मिलता है। स्वास्थवर्धन के निमित्त अनेक प्रकार के वर्णन भी धर्मशास्त्रों में पाये जाते हैं, समयानुसार इनका भी प्रचार–प्रसार विज्ञापनों द्वारा किया जाता रहा है। धर्म का नाम लेते ही संत एवं संस्कृति दोनो का ही बोध एवं महिमा का वर्णन हो जाता है। धर्म व संस्कृति की रक्षा हेतु संतों ने महान त्याग व बलिदान भी दिया है जिनकी गौरव गाथा विज्ञापन के विविध माध्यमों द्वारा आज भी देखने को मिलती है जिससे धर्म व संस्कृति को एक नया बल मिलता है।

प्रत्येक वस्तु अपने आप में विज्ञापन ही है चाहे उसका प्रचार किया जाय या नहीं। धर्म एवं पर्यटन से कोई न कोई भाव प्रकट होता है जो कि एक प्रवाह का कार्य करता है जिससे उस वस्तु का प्रचार–प्रसार होना आरम्भ हो जाता है और कालांतर में वह

विज्ञापन का एक मुख्य भाग बन जाता है। धर्म या पर्यटन दोनों व्यक्ति की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ही सृजित किये गये हैं। यदि व्यक्ति इनका उपयोग नहीं करता है तो उसका अस्तित्व पशु के समान हो जाता है अर्थात् उसमें और पशु में कोई भिन्नता नहीं। अतः धर्म एवं पर्यटन को बढ़ावा देना चाहिए। इनको बढ़ावा देने का श्रेय विज्ञापन एवं विज्ञापन के विविध आयामों को ही जाता है क्योंकि विज्ञापन के तीव्रतम माध्यम वर्तमान समय में अत्यधिक प्रचलन में प्रयोग किये जा रहे हैं जिससे कम समय में लोग अपनी बातों को दूर–दूर तक प्रसारित कर रहे हैं।

I UnHk I ph

1. लोक कल्याण सेतु
2. ऋषि प्रसाद
3. स्वामी विवेकानन्द साहित्य संचयन
4. अखण्ड ज्योति